• पढ़ो, समझो और लिखो :





४. बालिका दिवस



(सब बच्चे दुर्वा के घर खेलने के लिए एकत्रित हुए हैं। वहाँ चाची जी और बड़े भैया भी हैं।)

दूर्वा - सृष्टि, आज तो तुम बहुत बन-ठनकर आई हो ।

सृष्टि - आज तीन जनवरी बालिका दिवस है ना !

प्राची - अरे हाँ ! कल बहन जी ने बताया था कि सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन 'बालिका दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

चाची जी - सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम शिक्षिका मानी जाती हैं । अपने पति महात्मा जोतीबा फुले के साथ मिलकर उन्होंने लड़िकयों के लिए पुणे में पहली पाठशाला शुरू की थी ।

जिशान – आजकल तो लगभग सभी लड़िकयाँ पाठशाला जाती हैं । पढ़ाई-लिखाई और अन्य क्षेत्रों में खूब आगे हैं ।

मंत्र - हाँ-हाँ, आज समाजसेवा, शिक्षा, विज्ञान, संगीत, प्रशासन, शोधकार्य, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में लड़िकयाँ आगे बढ़ रही हैं।

सृष्टि - मेरी माँ बताती हैं कि शिक्षा हमें स्वावलंबी और सजग बनाती है।

भैया - कहा जाता है, एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है।

प्राची - हाँ ! इसलिए हम सबको खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए ।

सभी - खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे।



□ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । मुखर और मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । उन्हें अपने पड़ोस के परिवार के सदस्यों की जानकारी देने के लिए कहें । पड़ोसियों के महत्त्व बताएँ ।